कमरे में हाथी | सामाजिक और भावनात्मक शिक्षा (एसईएल) के अभाव वाला शिक्षण

शुभम रतूड़ी

लगभग तीन साल पहले, कोविड-19 की दूसरी लहर के उभरते भय के बीच, बच्चों की पढ़ाई को ज़ारी रखने के लिए विभिन्न क़दम उठाए गए थे। मैं उस समय कक्षा-4 में पढ़ने वाले 14 आदिवासी विद्यार्थियों के साथ काम कर रहा था। स्कूल दक्षिणी राजस्थान के एक छोटे-से गाँव की परिधि पर स्थित था। कक्षाएँ एक एकान्त मन्दिर में लगती थीं क्योंकि स्कूल महामारी के कारण बन्द थे।

राहुल जो सामान्यतः एक शान्त और ख़ुशमिज़ाज लड़का था, उस दिन आधी छुट्टी के दौरान अपने दोस्तों के साथ खेल रहा था। उनके बीच हो रही हल्की धक्का-मुक्की थोड़ी देर में ही हाथापाई में बदल गई। जब तक मैं बीच-बचाव के लिए पहुँचा, तब तक राहुल ने आयुष को पकड़कर उसका गला दबाना शुरू कर दिया था। एक वयस्क होने के बावजूद, मुझे इस 10 साल के बच्चे को दूसरे बच्चे का गला दबाने से रोकने के लिए काफ़ी मेहनत करनी पड़ी। यह देखना मेरी कल्पना से परे था कि राहुल जैसा शान्त और संयमित बच्चा भी इतने आक्रामक व्यवहार का प्रदर्शन कर सकता है।

स्कूल के बाद इस घटना को हेडमास्टर के साथ साझा किया गया। हेडमास्टर से जो कहानी मैंने सुनी उस कहानी ने मुझमें राहुल के प्रति सहानुभूति जगा दी। अपने माता-पिता के अलग होने के कारण वह अपनी दादी के साथ रह रहा था। राहुल भावनात्मक सहारे से वंचित था क्योंकि उसके पिता ने पुनर्विवाह कर लिया था। इससे पहले भी इस कोमल चित बच्चे ने घरेलू हिंसा के कई उदाहरण देखे थे और इन अनुभवों ने उसके व्यक्तित्व पर निश्चित ही एक स्थायी हानिकारक प्रभाव डाला होगा। यह स्पष्ट है कि परिस्थितियों ने बच्चे के मानसिक सृजन पर गहरा प्रभाव डाला था। जब किसी बच्चे की सामाजिक-भावनात्मक ख़ुशहाली पर ध्यान नहीं दिया जाता और उसका पोषण नहीं किया जाता, तब इसका असर उसके अकादमिक प्रदर्शन पर भी झलकता है। कहने की ज़रूरत नहीं है कि शिक्षकों के रूप में हम सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के इस महत्त्वपूर्ण पहलू को पहचान कर एक अच्छी शुरुआत कर सकते हैं।

अकादमिक उत्कृष्टता का पीछा करना

एक ऐसे माहौल में जहाँ शिक्षण के मूल में अकादमिक क्षमता सर्वोपरि है, यह समझना मुश्किल नहीं है कि क्यों व्यापक शिक्षा के महत्त्वपूर्ण घटकों की अवहेलना की जाती है। हम अक्सर देखते हैं कि शिक्षकों द्वारा बेहतर अकादमिक प्रदर्शन कर रहे विद्यार्थियों को ही पाठ्येतर गतिविधियों में भी भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। यह प्रथा कई बच्चों को अपनी प्रतिभा निखारने के मौक़े और हक़, दोनों से वंचित करती है। कला, खेल, संगीत या नृत्य के लिए सहज प्रवृत्ति रखने वाले बच्चे अपने कौशल को प्रदर्शित करने और निखारने के हक़दार मौक़ों से वंचित रह जाते हैं क्योंकि उनका शैक्षणिक प्रदर्शन एक त्रुटिपूर्ण शिक्षा प्रणाली के मुताबिक़ सन्तोषजनक नहीं पाया जाता।

स्कूल समाज का ही एक उपसमूह है जहाँ अच्छा प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को सामाजिक संरचना के शिखर पर रखा जाता है और अच्छा प्रदर्शन न कर पाने वाले बच्चों को अक्सर शिक्षकों और तथाकथित अच्छा प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों, दोनों द्वारा अपमानित, उपेक्षित और अनदेखा किया जाता है। यह प्रदर्शन-आधारित विभाजन कक्षा के भीतर उपसमूह बना देता है और तथाकथित ख़राब प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को अपने साथियों से सीखने के अवसर से वंचित कर देता है। विभिन्न अध्ययनों से यह पता चला है छोटी उम्र में ही विद्यार्थियों पर सार्वजनिक रूप से बुद्धिमान या सुस्त होने का ठप्पा लगाने का उनके समग्र व्यक्तित्व पर स्थायी हानिकारक प्रभाव पड़ता है, जो उन्हें आगे बढ़ने और अपनी वास्तविक क्षमता को खोजने से रोकने वाला एक बड़ा कारण बन सकता है।

एक शिक्षक के रूप में, मैं राहुल के प्रति पूर्वाग्रह से ग्रसित हो सकता था अगर मुझे उसके द्वारा इतनी कमसिन उम्र में झेले जा रहे भावनात्मक अभावों की जानकारी नहीं दी जाती। इस प्रसंग ने मुझे सिखाया कि किसी बच्चे के सच्चे और समग्र मूल्यांकन के लिए शिक्षक को उसकी पृष्ठभूमि और सह-पाठ्यक्रम रुचियों को हमेशा जगह देनी चाहिए। हम आज सचिन तेन्दुलकर को 'मास्टर ब्लास्टर' के रूप में पहचान नहीं रहे होते अगर उन्होंने वैमानिकी इंजीनियरिंग की होती और न ही हम एपीजे अब्दुल कलाम को 'मिसाइल मैन' के रूप में पहचानते अगर उन्होंने क्रिकेट करियर बनाने की कोशिश की होती। इसलिए किसी कक्षा के सभी बच्चों से बिल्कुल

अलग-अलग मानदण्डों पर समान अपेक्षाएँ रखना अगर बेतुका नहीं तो निश्चित रूप से अनुपयुक्त है।

परिस्थितियों को स्वीकार करना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 ऐसी समग्र शिक्षा की वक़ालत करती है जो एक समावेशी और बहुलतावादी समाज की स्थापना सुनिश्चित करती हो। लेकिन अक्सर, शिक्षक स्वयं आदिवासी और अन्य वंचित समुदायों के प्रति पूर्वाग्रहों से ग्रसित होते हैं और इस तथ्य को भूल जाते हैं कि इन समुदायों से आने वाले विद्यार्थी अपने समग्र विकास के लिए लगभग पूरी तरह से स्कूल पर निर्भर होते हैं।

इनमें से कई विद्यार्थी पोषण सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बहुत हद तक मध्याह्न भोजन (एमडीएम) पर निर्भर होते हैं। हम जानते हैं कि एमडीएम ने सरकारी स्कूलों में विद्यार्थियों का ठहराव सुनिश्चित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अनेक स्कूलों में बड़ी संख्या में ऐसे ग़ैर-नामांकित बच्चे भी हैं जिनके भाई-बहन पूर्व में स्कूल में औपचारिक रूप से नामांकित थे। ऐसे ही एक स्कूल में (शासकीय प्राथमिक विद्यालय, गुन्दी का भीलवाड़ा, कुम्भलगढ़), रजत नाम का नौ साल का लड़का है जो अपने दो भाई-बहनों (डेढ़ साल का भाई और तीन साल की बहन) को स्कूल ले आता है क्योंकि उसके माता-पिता काम पर जाते हुए इन बच्चों को उसकी देखभाल में छोड़ जाते हैं।

घर के हालात

रजत जैसे कई बच्चे हैं जिनकी घरेलू परिस्थितियाँ उनका बचपन उनसे छीन लेती हैं और समय से पहले वयस्क बनने के लिए मजबूर कर देती हैं। ग़रीबी का इस बच्चे पर गहरा प्रभाव पड़ा था। हालाँकि ग़रीबी से लड़ना शिक्षकों का दायित्व नहीं है लेकिन यह बेहद ज़रूरी है कि वे अपने विद्यार्थियों की दरिद्रता भरी सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि से जुड़ी चुनौतियों को समझें और स्वीकार करें, क्योंकि बच्चों के ये हालात उनकी ख़ुशहाली की राह में बड़ी बाधा बनते हैं। ऐसा हो सकता है जिस बच्चे ने अपना होमवर्क पूरा नहीं किया है वह ख़ाली पेट सोया हो और जो बच्चा समय पर स्कूल नहीं पहुँच पाया है उसे अपनी भेड़ों को खेतों में चराने ले जाना पड़ा हो।

जाति आधारित बहिष्कार

एक और महत्त्वपूर्ण सामाजिक बुराई जो कक्षाओं में अक्सर दिखती है वह है विद्यार्थियों के बीच जाति आधारित विभाजन। शिक्षक यदि सक्रिय रूप से हस्तक्षेप करें तो ऐसी अवांछित स्थितियों से प्रभावी ढंग से निपटा जा सकता है। हालाँकि, कुछ मामलों में, शिक्षक स्वयं कुछ ख़ास समुदायों से आने वाले बच्चों के प्रति पूर्वाग्रह रखते हैं। जाति आधारित भेदभावपूर्ण व्यवहार अभी भी देश के कई हिस्सों में, चाहे ग्रामीण हों या शहरी, देखने मिलता है। इस लड़ाई को जीतने के लिए, हमें ऐसे निष्पक्ष शिक्षकों की आवश्यकता होगी जो अपने विद्यार्थियों की समग्र ख़ुशहाली के बारे में चिन्तित रहें इस बात की परवाह किए बग़ैर कि बच्चे किस जाति/ धर्म/ पन्थ से आते हैं।

कक्षा में एसईएल

एसईएल-केन्द्रित पद्धति से पिछड़ रही कक्षा को विद्यार्थियों के व्यवहार का बारीक़ी से अवलोकन कर पहचाना जा सकता है। उदाहरण के लिए, भले ही किसी बच्चे के पास भाषा और गणित से जुड़ी ग्रेड-उपयुक्त योग्यताएँ हों, लेकिन उसका कमज़ोर सामाजिक-भावनात्मक अनुकूलन उसकी अभिव्यक्ति की क्षमताओं से परिलक्षित होता है। इनमें शामिल हैं अपने आप को खुलकर अभिव्यक्त करने, आत्म-जागरूक होने, टीम वर्क करने में सक्षम होने, साथियों की कठिनाइयों के प्रति संवेदनशील रवैया रखने और आस-पास के लोगों की पसन्द और नापसन्दगी के बारे में जागरूक रहकर अपने व्यवहार को समायोजित कर पाने जैसी क्षमताओं की कमी।

दुर्भाग्य से, इन पहलुओं पर ज़रूरी ध्यान नहीं दिया जाता। शिक्षकों के लिए यह ज़रूरी है कि वे इस तथ्य पर विचार करें और पहचानें कि ये क्षमताएँ शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के मूल में होनी चाहिए। एक समाज के तौर पर हमें यह समझना भी ज़रूरी है कि बच्चे का अच्छा अकादमिक प्रदर्शन उसके सामाजिक-भावनात्मक अनुकूलन को सुनिश्चित नहीं करता और बच्चों में समानुभूति, आत्म-जागरूकता और आत्म-नियमन का सामाजिक-भावनात्मक स्वास्थ्य पर मज़बूत असर पड़ता है।

शिक्षकों ने इन निष्कर्षों की पुष्टि की है हालाँकि वे यह भी बताते हैं कि उनका काफ़ी समय रिकॉर्डों के रखरखाव और बच्चों की कार्यपुस्तिकाओं की जाँच करने जैसे कार्यों में ख़र्च हो जाता है। इसलिए उन्हें अपने विद्यार्थियों के साथ गतिविधि-आधारित तरीक़े से काम करने के लिए पर्याप्त समय नहीं मिल पाता। शिक्षण का पेपर-आधारित तरीक़ा विद्यार्थियों की समग्र शिक्षा में मदद करने की बजाय हानि पहुँचाता है। इस पद्धति के माध्यम से हम बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (एफ़एलएन) से सम्बन्धित क्षमताओं और उद्देश्यों को भले ही पूरा कर पाएँ लेकिन हमें समझना होगा की एफ़एलएन केवल सीखने का एक घटक है न कि समग्र शिक्षा। हमारे लिए एसईएल को शिक्षण योजनाओं और मूल्यांकन तकनीकों का हिस्सा बनाना सीखने की प्रक्रिया के लिए एक विकल्प नहीं बल्कि उसका अभिन्न अंग है।

21वीं सदी में एसईएल

एसईएल और कक्षा प्रक्रियाएँ साथ-साथ चलती हैं। आज की तेज़ी से भागती-दौड़ती दुनिया में, मात्र अच्छे ग्रेड और प्रमाणपत्र किसी व्यक्ति को बहुत दूर नहीं ले जाते। टीमों में काम करने, खुलकर व प्रभावी ढंग से अपनी राय को व्यक्त करने और रचनात्मक समाधान देने वाले विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण को विकसित करने की क्षमताएँ विकास और सफलता के लिए अत्यावश्यक हैं। ऐसे गुण सिर्फ़ प्रमाणपत्र और अच्छे ग्रेड द्वारा सत्यापित नहीं किए जा सकते; उन्हें किसी व्यक्ति द्वारा दुनिया के तौर-तरीक़ों के साथ तालमेल बिठा पाने के लिए हासिल करना पड़ता है। किसी विषय का अकादमिक ज्ञान जीवन के विभिन्न चरणों में हासिल किया जा सकता है लेकिन संचार, रचनात्मक सोच, सहकार्य और समस्या-समाधान जैसी आन्तरिक क्षमताओं को सीखने के शुरुआती चरणों से ही पोषित करना आवश्यक है। दुख की बात है कि सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली न सिर्फ़ मानव विकास के इन महत्त्वपूर्ण पहलुओं से वंचित है, बल्कि ऐसा लगता है कि उनसे अनजान भी है।

हमारी कक्षाओं को सीखने के समृद्ध स्थानों में परिवर्तित किया जा सकता है बशर्ते शिक्षक एसईएल को कक्षा की प्रक्रियाओं के एक महत्त्वपूर्ण पहलू के रूप में स्वीकार करें। यह बोध हमारी कक्षाओं को हमारी छोटी उम्र के विद्यार्थियों के लिए सीखने के प्रभावी और अनुकूल स्थानों के रूप में रूपान्तरित करने की पूरी प्रक्रिया को शुरू करने के लिए पर्याप्त होगा।

संक्षेप में

आज शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रहे लोग शिक्षा की बहाली करने के तरीक़ों की तलाश में ख़ुद को डूबा हुआ पाते हैं। लेकिन इस तलाश के साथ समस्या यह है कि यह सिर्फ़ अकादमिक उपलब्धि तक सीमित रह सकती है और इसमें भावनात्मक विकास और सीखने के पहलुओं की उपेक्षा हो सकती है, क्योंकि ऐसी प्रक्रिया में मानवीय मूल्यों का ठोस आधार नहीं होगा और वह अपने आप को सतही अकादमिक दृष्टिकोण तक सीमित रखेगी। इसके अलावा, आज के पेशेवरों के लिए आवश्यक कौशल सिर्फ़ अकादमिक दृष्टिकोण के माध्यम से नहीं सिखाए जा सकते, क्योंकि इन्हें सहकार्य और सहयोग, सहानुभूति और समानुभूति के कौशलों को हासिल करने और निखारने वाले अनुकूल वातावरण में ख़ुद को तल्लीन करके हासिल और विकसित किया जाता है। और यह सब सामाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से हासिल होता है जिसके लिए हमारे विद्यार्थियों को उपयुक्त रूप से तैयार नहीं किया जा रहा। शिक्षण समुदाय को एसईएल के बारे में संवेदनशील बनाना हमारी शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए ताकि हम न केवल भविष्य के सक्षम पेशेवर लोग तैयार कर पाएँ बल्कि हमारे समाज के लिए दयालु, जागरूक और संवेदनशील नागरिक भी तैयार करें।

* बच्चों की पहचान को सुरक्षित रखने के लिए नाम बदल दिए गए हैं।

References

Multiple Intelligences, Howard Gardner

Divasvapna, Gijubhai Badheka

National Curriculum Framework (NCF) 2005

National Education Policy (NEP) 2020

Why Social and Emotional Learning Is Essential for Students https://www.edutopia.org/blog/why-sel-essential-for-students-weissberg-durlak-domitrovich-gullotta



शुभम रतूड़ी राजस्थान के राजसमन्द जिले के कुम्भलगढ़ ब्लॉक में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन में रिसोर्स पर्सन हैं। वे शिक्षकों और युवाओं के साथ सामाजिक मुद्दों पर उनके नज़रियों पर और सामग्री-आधारित विषयों पर काम करने के अलावा, बच्चों द्वारा दूसरी भाषाएँ, विशेष रूप से अँग्रेज़ी भाषा, सीखने की प्रक्रियाओं में सक्रिय रूप शामिल रहते हैं। उनसे *shubham.raturi@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : सन्दीप दुबे **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय